1613. = Удорна-Ка́д. 9, 10. в. फाणा st. फटा. с. विषमस्तु न चाट्यस्तु. d. खटाटापी.

1625. = Уродна-Кар. 5,5. a. निस्पत्ना eine Ausg. d. स्पष्ट st. स्पाट.

1632. ÇATAKÂV. 10. c. तर st. भर und उत्पत्तः st. उच्छलतः

1654. BHARTR. 1,77 lith. Ausg. III. c. प्रचारित st. प्रतारित.

1659. Vgl. Spruch 4484.

1665. Vgl. Spruch 5052.

1670. = Kan. 41 bei Weber. Vrddha-Kan. 1,9.

1672. b. पायस ist nicht süsse Milch, sondern eine Milchspeise.

1673. d. Zu der Lesart पाइ।इ vgl. Suça. 2,215, 16.

1677. = Kan. 34 bei Weber (c. कलक्ं. d. म्रज्ञानस्य कुतो उभयम्). Уродил-Кan. 3,11 (a. उद्योगान्नास्ति दारिन्यं und उद्योगं नास्ति दा॰. c. मीने च. d. नास्ति जागरती भयं).

1678. = Kan. 20 bei Weber. d. विज्ञ st. प्राज्ञ.

1688. = VRDDHA-KAN. 12,6. a. दोषी eine Ausg. c. वर्षा st. धारा. d. जन्मार्जितं.

1692. Виактя. 2,72 lith. Ausg. III. d. कृतातियागाः.

1698. = Kan. 9 bei Weber. a. परदारान wie Nitisank. b. परिवाई. c. परिवाहमं.

1706. = Уврона-Ка́я. 9,2. b. ये भाषांते नेराधमाः. c. विलयं und निलयं st. निधनं. d. विल्मकोटर.

1709. = Рвазайдави. 4,а. а. परं विनीतलमुपैति सेवया. ь. कि मूषपाम् डा. विभूः.

1712. a. चर्ची ist richtig und bedeutet das Sichkummern um Etwas.

1714. Vgl. Spruch 5141.

1718. Bhartr. 3,61 lith. Ausg. III. b. तय्ववा st. तत्तवा.

1719. Çатакач. 65. в. मधुर्विरतोत्काएठालापाः. с. स्वेदोद्रेका.

1726. Виактк. 3,60 lith. Ausg. III (b. प्रसादे, व्हृद्ये केशविपालम्). Çатака́v. 104 (b. क्लोशमपालम्).

1729. = ห์ลัก. 74 bei Weber. Vrddha-ห์ลัก. 2,5 (c. สุรโน สาº in einer Ausg.).

1735. = Каунамятак. 96. b. нал st. नृणाम्.

1736. = Кауітамятак. 90.

1748. Auch in Çârng. Paddn. (aber nur in der einen Hdschr.) Gunapraçansà 20. c. d. vor a. b. d. ॡद्याव्हतार्यते d. i. ॡद्याद्वतार्यते.

1749. Çатака́v. 4. d. वाष्पञ्च st. वाष्पस्त्.

1754. b. Es ist बहुत्यां zu schreiben; vgl. das Wörterbuch u. d. W.

1756. Auch unter dem Çântiçataka in Nîtisamk. S. 79 und Çatakâv. 35. b. त्रज्ञसि st. धमित. c. d. धाल्या तु जातु विमलं न तदात्मलीनं तड्डला संस्पृशसि निर्वृतिमेषि येन. Çatakâv. 106. c. श्रात्मनीनं.